COVID-19

प्रदेश टाईम्स

लॉकडाउन में थैलेसीमिया पीड़ितों के लिये संकट मोचक बनी ग्लोबल रिसर्च एवं वेलफेयर सोसायटी

भोपाल(निप्र)। कोविड-19 के कारण विश्वभर में फैली जानलेवा महामारी से बचाव हेतु केन्द्र सरकार ने 14 अप्रैल से 3 मई तक देशव्यापी लॉक डाऊन का दूसरा चरण लागू कर दिया है। कोरोना वायरस से बचाव हेतु अपनाएं जा रहे ये सुरक्षा उपाय थैलेसीमिया पीड़ितों के लिये जान पर आफत बनते जा रहे है। यदि मध्यप्रदेश की महानगरी इंदौर की बात करे तो यहाँ केवल चोइथराम हॉस्पिटल में ही ब्लड ट्रान्सफ्युशन की सुविधा मौजूद है। जहाँ केवल न इंदौर के बल्कि आस-पास के जिलों से भी बड़ी संख्या में थैलेसीमिया पीड़ित ब्लड ट्रान्सफ्युशन के लिये पहुँचते है। किन्तु कोरोना रेड जोन में होने के कारण प्रषासन द्वारा चोइथराम हॉस्पिटल का अधिग्रहण कोरोना संक्रमितों के उपचार के लिये कर लिया गया है। इस कारण हॉस्पिटल प्रबंधन थैलेसीमिया पीड़ितों को कहीं और इलाज कराने के लिये कह दिया। देषव्यापी लॉक डाऊन के कारण यही परिस्थिति थैलेसीमिया पीड़ितों की जान पर आफत बन कर आ गई थी। ऐसे में इन पीड़ितों का एक मजबूत सहारा बनकर उभरा एक एन.जी.ओ. ग्लोबल रिसर्च एंड वेलफेयर सोसायटी जो कि थैलेसीमिया के क्षेत्र में कार्य करने वाले अंतर्राष्ट्रीय संगठन थैलेसीमिया इंटरनेषनल फेडरेषन की सहायक इकाई है। इस एन.जी.ओ. ने इंदौर नगर के अपर आयुक्त श्री एस. कृष्ण चैतन्य के सहयोग से न केवल मेडीकेयर हॉस्पिटल के प्रबंधन से बात कर 155 पीड़ितों के ब्लड ट्रान्सफ्युशन की व्यवस्था की बल्कि उन्हें आवष्यक जीवन रक्षक दवाएं भी उपलब्ध कराने में सहायता की।

थैलेसीमिया इंटरनेषनल फेडरेषन के राज्य समन्वयक (मध्य प्रदेष) डॉ. सी.बी.एस. दैगी ने बताया कि उन्हें इससे संबंधित कई मेल और मैसेजे प्राप्त हो रहे है तथा वे अपने स्तर पर पूरी तत्परता से थैलेसीमिया पीड़ितों की सहायता कर रहे है। उन्होंने मीडिया में अपना मोबाईल नंबर 9425013170 और ईमेल आईडी grwsb8@gmail.com जारी करते हुए कहा कि वे इस विकट स्थिति में थैलेसीमिया पीड़ितों की सहायता के लिये 24 घंटे सातों दिन तत्पर है। यदि किसी भी पीड़ित व्यक्ति को उनकी सहायता की आवष्यकता हो तो वह किसी भी वक्त एन.जी.ओ. से संपर्क कर सकता है। इस समय भारत की कूल जनसंख्या का लगभग 3.5 प्रतिषत भाग थैलेसीमिया से पीड़ित है। जिन्हें 15 से 20 दिन में ब्लड ट्रान्सफ्युशन कराना होता है। यदि ब्लड ट्रान्सफ्युशन न हो तो पीड़ित को संक्रमण होने का खतरा होता है। जो कि उसके लिये जानलेवा साबित हो सकता है। लॉक डाऊन की वजह से थैलेसीमिया पीड़ितों को न तो ब्लड ट्रान्सफ्युशन के लिये ब्लड मिल

रहा है और न ही आवष्यक दवाओं की पूर्ति हो पा रही है। क्योंकि स्वैच्छिक रक्तदाता ऐसी विकट परिस्थितियों में रक्तदान के लिये आगे आने से कतरा रहे है। अगर यही हालात बने रहे तो कोरोना वायरस का तो पता नही, लेकिन थैलेसीमिया के कारण कई लोग असमय काल के गाल में समा सकते है। डॉ. सी.बी.एस. दैगी ने कहा कि - 'इन गंभीर हालात में सरकार को चाहिये कि सोषल डिस्टेंसिंग का पालन करते हुए सीमित संख्या में रक्त दान षिविरों का अयोजन कराया जायें। जिससे थैलेसीमिया पीड़ितों को ब्लड ट्रान्सफ्युशन के लिये ब्लड की आपूर्ति सुनिष्चित हो सके और सरकार को क्षेत्रीय स्तर पर ऐसे हॉस्पिटल भी चिन्हित करने चाहिये जहाँ बिना किसी परेषानी के ब्लड ट्रान्सफ्युशन की सुविधा उपलब्ध हो सकें। लॉक डाऊन के कारण पूरे देष में सभी प्रकार की व्यापार एवं व्यावसायिक गतिविधियां बंद है। जिससे थैलेसीमिया पीड़ितों के सामने वैसे ही अधिक संकट की स्थिति है। अतः समाज के सक्षम लोग और सामाजिक संस्थाएं इनकी मदद के लिये अपना हाथ बढ़ाएं और प्रषासन द्वारा जब तक लॉक डाऊन जारी है, तब तक थैलेसीमिया पीड़ितों को आवष्यक जीवन रक्षक दवाओं की निःशुल्क आपूर्ति सुनिष्चित की जायें। उन्होंने थैलेसीमिया पीड़ितों की आवाज सरकार तक पहुँचाने के लिये भारत के प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी तथा मध्य प्रदेष के मुख्यमंत्री श्री षिवराज सिंह चौहान को पत्र लिखा है। आषा है इस संबंध में सरकार जल्द ही कदम उठायेगी।

प्रदेश टाईम्स

थैलेसीमिया पीड़ितों को कोरोना संक्रमण से बचना अत्यधिक आवश्यक है : डॉ. सी.बी.एस दांगी

भोपाल निप्र। विश्व समुदाय के समक्ष महामारी संकट के रूप में सामने आया कोरोना वायरस (कोविड-19) अस्थमा, शुगर, कैंसर, दिल के मरीज, किडनी के रोगियों एवं थैलेसीमिया पीड़ितों के लिये भी गंभीर समस्या बन सकता है।

इससे थैलेसीमिया पीड़ितों को जान का खतरा हो सकता है। यहां पर बता दे कि इस रोग से पीड़ित रोगियों को हर 15-20 दिनों में खून चढ़ाना पड़ता है। अगर किन्हीं हालात में समय पर खून नहीं मिलता तो रोगियों में एनीमिया की स्थिति बन जाती है और फिर उन्हें संक्रमण का खतरा भी अधिक हो जाता है। ऐसे हालात में अगर रोगी को कोविड-19 संक्रमण हो जाये तो परिस्थितियां और भी गंभीर हो सकती है। जिन बच्चों में तिल्ली का ऑपरेशन हुआ है, तो उनमें तो यह समस्या और भी विकट है।

कोविड-19 महामारी के चलते इन दिनों रक्तदान शिविर नहीं लग रहे हैं। ऐसे में स्वैच्छिक रक्तदाता कोविड-19 संक्रमण के डर से रक्तदान के लिये आगे नहीं आ रहे हैं। ऐसे में स्वास्थ्य विभाग को चाहिये कि रक्तदान करने वालों के हितों का ऐसा प्रबंध करें, जिससे रक्तदान स्वैच्छिक रक्तदान कर सके। हालांकि अभी ऐसे हालात नहीं है कि रक्तदान स्वयं सामने आये। वहीं, रक्तदाताओं की संख्या में इसी प्रकार कमी आई तो थैलेसीमिया के मरीजों का जीवन खतरे में पड़ सकता है। थैलेसीमिया इंटरनेशनल फेडरेशन के मध्यप्रदेश राज्य समन्वयक डॉ. सी.बी.एस दांगी माने तो इस समय उपलब्ध आंकड़ों के आधार पर भारत में 3.5 करोड़ थैलेसीमिया के सक्रीय रोगी है। रोगियों की दूसरी बड़ी समस्या यह है कि उन्हें इस समय दवाई नहीं मिल रही है। उनके मुताबिक, थैलेसीमिया रोगी को बार-बार खून चढ़ाने से शरीर में अतिरिक्त लोहा जमा हो जाता है। ऐसे में इसे निकालना जरूरी है। अतिरिक्त जमा हुए लोहे को निकालने के लिए जो दवा रोज खानी पड़ती है। वह या तो अस्पताल में मिलती है या फिर थैलेसीमिया संस्थानों में। कुरियर और अन्य व्यवस्थाएं बंद होने के कारण हर जगह इन दवाओं की बहुत कमी देखी जा रही है। ऐसे में यदि सही समय पर दवा न मिले तो थैलेसीमिया पीड़ित के शरीर में अतिरिक्त लोहा जमा होने से उनकी जान भी जा सकती है। डॉ. सी.बी.एस दांगी (सचिव ग्लोबल रिसर्च वेलफेयर संस्था) की मांग है कि कुछ स्थानों पर सीमित रक्तदान शिविर लगाने की अनुमति दी जाये तथा थैलेसीमिया पीड़ितों की आवश्यक दवाईयों की आपूर्ति सरकार द्वारा सुनिश्चित की जाये।

थैलेसीमिया पीड़ितों को कोरोना संक्रमण से बचना अत्यधिक आवश्यक है : डॉ. सी.बी.एस दांगी

भोपाल निप्र। विश्व समुदाय के समक्ष महामारी संकट के रूप में सामने आया कोरोना वायरस (कोविड-19) अस्थमा, शुगर, कैंसर, दिल के मरीज, किडनी के रोगियों एवं थैलेसीमिया पीड़ितों के लिये भी गंभीर समस्या बन सकता है।

इससे थैलेसीमिया पीड़ितों को जान का खतरा हो सकता है। यहां पर बता दे कि इस राग से पीड़ित रोगियों को हर 15-20 दिनों में खून चढ़ाना पड़ता है। अगर किन्हीं हालात में समय पर खून नहीं मिलता तो रोगियों में एनीमिया की स्थिति बन जाती है और फिर उन्हें संक्रमण का खतरा भी अधिक हो जाता है। ऐसे हालात में अगर रोगी को कोविड-19 संक्रमण हो जाये तो परिस्थितियां और भी गंभीर हो सकती है। जिन बच्चों में तिल्ली का ऑपरेशन हुआ है, तो उनमें तो यह समस्या और भी विकट है।

कोविड-19 महामारी के चलते इन दिनों रक्तदान शिविर नहीं लग रहे हैं। ऐसे में स्वैच्छिक रक्तदाता कोविड-19 संक्रमण के डर से रक्तदान के लिये आगे नहीं आ रहे हैं। ऐसे में स्वास्थ्य विभाग को चाहिये कि रक्तदान करने वालों के हितों का ऐसा प्रबंध करें, जिससे रक्तदान स्वैच्छिक रक्तदान कर सके। हालांकि अभी ऐसे हालात नहीं है कि रक्तदान स्वयं सामने आये। वहीं, रक्तदाताओं की संख्या में इसी प्रकार कमी आई तो थैलेसीमिया के मरीजों का जीवन खतरे में पड़ सकता है। थैलेसीमिया इंटरनेशनल फेडरेशन के मध्यप्रदेश राज्य समन्वयक डॉ. सी.बी.एस दांगी माने तो इस समय उपलब्ध आंकड़ों के आधार पर भारत में 3.5 करोड़ थैलेसीमिया के सक्रीय रोगी है। रोगियों की दूसरी बड़ी समस्या यह है कि उन्हें इस समय दवाई नहीं मिल रही है। उनके मुताबिक, थैलेसीमिया रोगी को बार-बार खून चढ़ाने से शरीर में अतिरिक्त लोहा जमा हो जाता है। ऐसे में इसे निकालना जरूरी है। अतिरिक्त जमा हुए लोहे को निकालने के लिए जो दवा रोज खानी पड़ती है। वह या तो अस्पताल में मिलती है या फिर थैलेसीमिया संस्थानों में। कुरियर और अन्य व्यवस्थाएं बंद होने के कारण हर जगह इन दवाओं की बहुत कमी देखी जा रही है। ऐसे में यदि सही समय पर दवा न मिले तो थैलेसीमिया पीड़ित के शरीर में अतिरिक्त लोहा जमा होने से उनकी जान भी जा सकती है। डॉ. सी.बी.एस दांगी (सचिव ग्लोबल रिसर्च वेलफेयर संस्था) की मांग है कि कुछ स्थानों पर सीमित रक्तदान शिविर लगाने की अनुमति दी जाये तथा थैलेसीमिया पीड़ितों की आवश्यक दवाईयों की आपूर्ति सरकार द्वारा सुनिश्चित की जाये।

डॉ. सी.बी.एस दाँगी: थैलेसीमिया पीड़ितों कों कोरोना संक्रमण से बचना अत्यधिक आवश्यक

प्रेषित समय :20:16:55 PM / Tue, Apr 7th, 2020

विश्व समुदाय के समक्ष महामारी संकट के रूप में सामने आया कोरोना वायरस (कोविड - 19) अस्थमा, शुगर, कैंसर, दिल के मरीज, किडनी के रोगियों एवं थैलेसीमिया पीड़ितों के लिये भी गंभीर समस्या बन सकता है.

इससे थैलेसीमिया पीड़ितों को जान का खतरा हो सकता है. यहां पर बता दे कि इस रोग से पीड़ित रोगियों को हर 15-20 दिनों में खून चढ़ाना पड़ता है. अगर किन्ही हालात में समय पर खून नही मिलता तो रोगियों में एनीमिया की स्थिति बन जाती है ओर फिर उन्हें संक्रमण का खतरा भी अधिक हो जाता है. ऐसे हालात में अगर रोगी को कोविड - 19 संक्रमण हो जाये तो परिस्थितियां और भी गंभीर हो सकती है. जिन बच्चों में तिल्ली का ऑपरेषन हुआ है, तो उनमें तो यह समस्या और भी विकट है.

कोविड - 19, महामारी के चलते इन दिनों रक्तदान षिविर नही लग रहे है. ऐसे में स्वैच्छिक रक्तदाता कोविड - 19 संक्रमण के डर से रक्तदान के लिये आगे नही आ रहे है. ऐसे में स्वास्थ्य विभाग को चाहिये कि रक्तदान करने वालों के हितों का ऐसा प्रबंध करें, जिससे रक्तदान स्वैच्छिक रक्तदान कर सके. हालांकि अभी ऐसे हालात नही है कि रक्तदाता स्वयं सामने आयें. वही, रक्तदाताओं की संख्या में इसी प्रकार कमी आई तो थैलेसीमिया के मरीजों का जीवन खतरें में पड़ सकता है.

थैलेसीमिया इंटरनेशनल फेडरेशन के मध्य प्रदेश राज्य समन्वयक डॉ. सी.बी.एस दाँगी की माने तो इस समय उपलब्ध आंकड़ों के आधार पर भारत में 3.5 करोड़ थैलेसीमिया के सक्रीय रोगी है. रोगियों की दूसरी बड़ी समस्या यह है कि उन्हें इस समय दवाई नही मिल रही है.

उनके मुताबिक, थैलेसीमिया रोगी को बार - बार खून चढ़ाने से शरीर में अतिरिक्त लोहा जमा हो जाता है. ऐसे में इसे निकालना जरूरी है. अतिरिक्त जमा हुए लोहे को निकालने के लिये जो दवा रोज खानी पड़ती है. वह या तो अस्पताल में मिलती है या फिर थैलेसीमिया संस्थानों में. कुरियर और अन्य व्यवस्थाऐ बंद होने के कारण हर जगह इन दवाओं की बहुत कमी देखी जा रही है. ऐसे में यदि सही समय पर दवा न मिले तो थैलेसीमिया पीडित के शरीर में अतिरिक्त लोहा जमा होने से उनकी जान भी जा सकती है. ग्लोबल रिसर्च वेलफेयर संस्था के सचिव डॉ. दाँगी ने की मांग है कि कुछ स्थानों पर सीमित रक्तदान षिविर लगाने की अनुमति दी जाये तथा थैलेसीमिया पीड़ितों की आवश्यक दवाईयों की आपूर्ति सरकार द्वारा सुनिश्चित की जायें.